अनामिका की कविताएँ

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S
ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI
प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर
हिंदी विभागाध्यक्ष

अनामिका की कविताएँ

प्रस्तावना

- हिंदी साहित्य की साहित्यिक विधाओ में कविता एक ऐसी विधा है, जो कवी मन की अनुभूती को हर बंधन से मुक्त कर जनसमुदाय के संमुख मुक्त भाष्य से अपनी अभिव्यक्ती को दर्ज करती है।
- समकालीन साहित्य मे खासकर महिला कवयित्रीयों ने प्रकृतीसे जन्मतः पायी हुई सहादयता की अनुपमता से अपनी अति संवेदनशीलता एवं भाव विभोरता की समृद्धता से समस्त सृष्टी को समहित कर लिया है।
- समकालीन साहित्यकार अनामिका मूलतः कवयित्री है "काव्य" उनका मूल स्वभाव है।
- प्रख्यात आलोचक डॉ. मॅनेजर पांडे के अनुसार, भारतीय समाज एवं जन जीवन में जो घटीत हो रहा है, अनामिका की कविता मे उसकी प्रभावी पहचान और अभिव्यक्ती देखने को मिलती है |
- अनामिका अपने कविताओं मे स्त्री जीवन की उस त्रासदी को प्रकाश मे लाती है।
- अनामिका की कविताओं मे संवेदनशीलता आलोचनात्मक रवैया दिखाई देती है।

१. शीतल स्पर्श एक धूप को

- इस संग्रह में ६७ कविताएँ संग्रहित है।
- ज्यादातर कविताएँ प्रकृति का संबोध कराती हैं।
- एक बच्चे का लालित्य एवं उसके कोतुहल को मानवीय संवेदना का प्रतीक मानकर प्रकृति के साथ उसका स्नेह संबंध व्यक्त किया गया है।
- जैसे – "आदर्श हमारा" नामक कविता मे कवियित्री कहती है –

"शीतल स्पर्श एक धूप को दे,

ढलकर कंधों पर वह द्रवित होगी,

बहेगा सोना धरती पर।

चाँदनी को चूम ले गर्म होठों से,

छिटक अंग से जायेगी वह

चाँदी का वर्क नभ पर बिछेगा।"

२. गलत पते की चिट्ठी

- सन १९७९ मे अनामिका की कविताओ का दूसरा संग्रह प्रकाशित हुआ |
- इसमे कुल ३२ कविताएँ संकलित है|
- इन कविताओं मे बाल मनोविज्ञान के सहारे बाल जीवन की सहज शंकाओ व्यक्त किया गया है|
- पहली कविता है – " मन इधर उड़ा, मन उधर उड़ा"
- इसमे बाल मन के विस्तृत रूप को व्यक्त किया गया है|

"तुलसी चौरो के इर्द – गिर्द,

कबतक मंडराएगा कोई,

विस्तार बड़ा!

विस्तार बड़ा देगा उधार,

देगा उधार यह गीलगन।"

३. समय के शहर में

- सन् १९९० मे प्रकाशित हुआ|
- इस संग्रह की कविताएँ विषय – वैविध्य को लेकर सहद्य पाठक को लुभाती है|
- कुल ६ भागों मे विभाजित है – बेजिल्द जिंदगी, दौगरा, बाते, ग्रहिणी की डायरी, मौसम और दिवाली परदेस की|
- इनमे कुल ११८ कविताएँ संकलित है|
- "मौसम" इस पाँचवे भाग में प्रकृति को संबोध मानकर, स्त्री जीवन से संबंधित प्रश्नों को वव्यक्त किया गया है।
- "दोपहर" नामक कविता स्त्री जीवन की त्रासदी एवं पीड़ा को दर्शाती है-

"धूप का गुस्सा
दिनों –दिन बढ़ रहा है
खूब रूखा बोलती हैं
धूल की बोली
धमकती धू-धू कर।"

४. बीजाक्षर

- यह सन् १९९३ का प्रकाशन है|
- इस संग्रह में छोटी –छोटी ४९ कविताएँ संग्रहित है|
- समय के सच को समाज के सामने एक जीवंत दृश्य पेश करने मे कवियित्री सफल रही है|
- जैसे – दाँत, कंकड़िया, पानी, कैलेंडर, लोहा, गंध, आदि|
- दाँत कविता मे कवियित्री कहती है –

“कौआ देखेगा तो नही जमेगा

चुपचाप चलो गाड़ आएँ

भुट्टे के खेतों के पीछे कहीं दाँत,

बच्चे ने बच्चे से कहाँ।”

५. अनुष्टप

- यह संग्रह सन् १९९८ मे प्रकाशित हुआ है|
- इसे "गिरिजा कुमार माथुर" और ऋतुराज सम्मान से सम्मानीत किया गया है|
- इसमें कुल ७२ कविताएँ संग्रहित है, जिन्हे ७ भागों में किया गया है|
- जैसे – बीच का समय, आधी दुनिया, कुड़ा बिनते बच्चे, प्रागौतिहासिक, परदेश का पहला जाड़ा, बाज लोक और बहिनाबाई : एकस्वी सदी|
- "बहिनबाई" नामक एक लंबी कविता अंतिम भाग मे प्रस्तुत है, जिसमे ऐतिहासिक घटनाओं की बात कही गई है|
- "खोए पते" नामक अपने कविता मे कवियित्री कहती है –

"बुद्धिमति थी सीता

शोक के महाकाश से सोना बरसाकर

राम को दिखाया था रास्ता!

सिद्ध किया था अपने ढंग से

लापता लोग नही होते, पूरी तरह लापता।"

६. कविता मे औरत

- सन् २००४ मे प्रकाशित यह संग्रह स्त्री जीवन की उपस्थिति का दस्तावेज है|
- इस संग्रह मे **२४ कविताएँ** है जो वर्तमान में **नारीवाद के स्वरूप** को तथा **समाज मे स्त्री दशा के** बदलाव को व्यक्त करती है|
- "**मौसम बदलने की आहट**" नामक कविता मे **नारीवाद का स्वरूप** एवं **समाज में स्त्री की स्थिती** क्या है यह दर्शाती है|
- अधिक कविताओं में पुरुष वर्चस्व का क्रूर चहरा पर्दाफाश करते हुए कवियित्री कहती है –

"अंकल तुम भारी बहुत हो,
अच्छा, एक चॉकलेट खिला दो!
अंकल, तुम्हारी भी बेटी है?
अच्छा, बोलो उसका क्या नाम?
वह भी मेरे जैसी मजेदार है क्या? बोलो तो।"

७. खुरदरी हथेलियाँ

- यह संग्रह सन् २००५ मे प्रकाशित हुआ है|
- इसमे कुल ७८ कविताएँ है जो ६ भागों मे विभाजित है|
- जैसे – अंतः पुरम, दूध कट्ट, कुछ अटपटी प्रेम कविताएँ, आजादी, मुसलमान क्यों होते हैं अम्मा, और तोस भरोस आदि।
- स्त्री को एक उपभोग की वस्तु के रूप मे देखने वाले पुरुषवादी समाज व्यवस्था पर प्रहार करते हुए कवियित्री "स्त्रीयाँ" नामक कविता मे लिखती है –

"सुनो हमें अनहद की तरह

और समझो जैसे समझी जाती हैं

नई-नई सीखी हुई भाषा।"

८. दूबधान

- सन् २००७ मे प्रकाशित इस संग्रह Ki कुल ७९ कविताएँ ५ भागों में विभाजित है।
- जैसे – जोगिनियाँ कोठी, पेड़ हरे स्तन हैं माँ के, गृहलक्ष्मी, बालभिक्खू और मायानगरी।
- “जोगिनियाँ कोठी” इस संग्रह के प्रथम भाग मे कवियित्री स्त्री देह को साधन मानकर उपयोग मे लाने वाली पुरुष व्यवस्था पर प्रहार करते हुए “भामती की बेटियाँ”नामक कविता मे कहती हैं -

“ ग्रंथ अपने स्वयं ही रचेगा

लगातार। इसी तरह। हर युग में।”

- दूबधान संग्रह की कविताएँ **विद्रोह नही करती** बल्कि **उम्मीद** की बची हुई किरणों के कल के सुनहरे सुबह की प्रतिक्षा करती है।
- दूबधान की कविताएँ **स्त्री केंद्रित** है।

९. टोकरी में दिगंत थेरी गाथा

- सन् २०१५ मे प्रकाशित इस संग्रह मे इतिहास की उपस्थिति से स्त्री विमर्श की दैनीकी को तलाशा गया है।
- इस संग्रह की कुल १०९ कविताएँ पुरोवाक की पुननर्व भूमिका के साथ ३ अंको में विभाजित है।
- "टोकरी में दिगंत थेरी गाथा" कविता मे अपने लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए कवयित्री कहती है –

" मैं सारी दुनिया उठा लूंगी माथे पर

अपने ही आँचल की बांधे हुए पगड़ी।"

- स्त्री की मौजूदगी समाज का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।
- वह अपने कर्म दायित्व से ही समाज में अपने रिक्त स्थान को पूरा करने का जिम्मा उठा ले सकती है।

निष्कर्ष

- स्पष्ट है कि, अनामिका ने अपने साहित्य निर्माण के क्षेत्र का चुनाव चाहे वह सामाजिक हो चाहे राजनैतिक अथवा ऐतिहासिक सभी को बड़ी कुशलतापूर्वक अपनी अभिव्यक्ति का अमुग्धात्मक विषय बनाया है।
- अनामिका ने अपने कविताओं मे स्त्री जीवन की उस त्रासदी को प्रकाश मे लाती है जिसे छायावादी कवियित्री महादेवी वर्मा ने व्यक्त किया था। सामाजिक व्यवस्था के कारण अपने गुणादर्श की आहुति देती हुई स्त्री जीविकोपार्जन के साधन मे अपने अपने देह को उपयोग लाने मे भी हिचकाती नही।
- स्त्री व्यवहारिता के इस परिवर्तन को समझने के लिए सामाजिक स्तिथि को समझने की इनकी कविता पर्याप्त योग देती है।
- अतः स्पष्ट है की अनामिका ने जहाँ कविताओं को प्रगतिशील विचारों की रहबरी मानकर मानवी मान्यताओं को आधार प्रधान किया है।

संदर्भ सूची

1. वही, आदर्श हमारा, पृष्ठ - १५
2. गलत पते की चिठ्ठी, मन इधर उडा मन उधर उडा, पृष्ठ -१
3. वही, दोपहर, पृष्ठ- १०९
4. अनामिका, बीजाक्षर, दांत, पृष्ठ-१३
5. अनामिका, अनुष्ठुप बीच का समय, खोए पते, पृष्ठ- २४
6. अनामिका कविता मे औरत, पृष्ठ- १४; बरस की सेक्स वर्कर्स पृष्ठ – १२४
7. अनामिका, खुरदरी हथेलिया, स्त्रिया पृष्ठ- १४
8. वही, भामती की बेटीया, पृष्ठ – २४
9. अनामिका टोकरी मे दिगन्त थेरी गाथा २०१४, पृष्ठ- २१

8.1.1 पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ एवं परिभाषा

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता.गेवराई जि.बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर